Shri Vijayanarasimha Stuti

श्रीविजयनारसिंहस्तुतिः

Document Information

Text title : Shri Vijayanarasimha Stuti

File name : vijayanArasiMhastutiH.itx

Category : vishhnu, dashAvatAra, stuti, viShNu

Location : doc_vishhnu

Author : araiyara shrIrAmasharmaNA bAlya

Proofread by : M K Barman

Description/comments : nRRisiMhakosha 2 upAsanA khaNDa

Latest update : August 4, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

August 4, 2025

sanskritdocuments.org

Shri Vijayanarasimha Stuti

श्रीविजयनारसिंहस्तुतिः

भजदभयङ्कर भीमपराक्रम वीरनृसिंहविभो ।
खरनखरायुध पाहि परात्पर घोरतराघहर ॥ १॥

विष्फुरितालककेसरभासुर दीप्तललाटतट ।
फालविलोल विशङ्कट विष्फुरदग्नि विलोचन ! भो ॥ २॥

भ्रुकुटिभयङ्कर ! तरलिततारक केकरनेत्र जय ।
उद्गत निश्चल कर्णविलम्बित चन्द्ररविद्वय कर्णिक भो ॥ ३॥

विधुतसटारुण पटलतटस्फुट ऋक्षसहस्र जय ।
अतिशितपायित वज्रशतायित भीकरदंष्ट्र जय ॥ ४॥

विस्फुरदग्र मुखोदरनिर्गलदुग्र फणिद्युतिजिह्व जय ।
व्यायत घोर गुहामुखनिर्गत घनगुरुगर्जित विजय जय ॥ ५॥

तुङ्गभुजद्वय दण्डविजृम्भित शाङ्गरथाङ्गकर ।
अंसविजृम्भण सम्भ्रमजृम्भित पीवरवत्स विभो ॥ ६॥

शुभ्र परिस्फुरदुग्रभुजङ्गम भङ्ग्युपवीत विभो ।
मुष्टिमितिक्रम पीतपटोत्कट मग्नवलग्न विभो ॥ ७॥

अष्टमहाभुज यष्टिविजृम्भण कूणितदृक् करिकूट विभो ।
वालविधूनन वेगविकम्पित सप्तसमीरण चक्र विभो ॥ ८॥

पीनतर प्रवरोरु समुद्धतिडोलित विश्वकटाह विभो ।
कच्छपकर्कश जानुविघट्टन भुग्नकुलाचलचक्र विभो ॥ ९॥

स्तम्भ विजृम्भण भावभयङ्कर विक्रमणक्रम जङ्घ विभो ।
युद्धसमुद्धत दानवमर्दन सज्जपदद्वयं जयजय भो ॥ १०॥

जयजय विश्वसुमङ्गल पिङ्गलवर्ण विनिर्जित नैशकल ।
ब्रह्मक्षत्रविबोध दिवाकर यादवशैल नृसिंह जय ॥ ११॥

घोरतरं तवरूपमिदं गुरुदेव रिपुव्रज भीतिकरम् ।
दुर्जन गर्जन तर्जन निश्चल साधुजन व्रजभीतिहरम् ॥ १२॥

जयतु जयोदय सम्भ्रम सम्भृत जय लक्ष्मीकर सङ्कलितम् ।
रूपमिदं तव देव महत्तरमुत्तम वीरदयादयितम् ॥ १३॥

जय जय विश्वविधारण कारण सत्वसमुद्धर धर्मविभो ।
जयजय सत्वर वैरिविजित्वर वीरनृसिंह विभो ॥ १४॥

दुष्ट भयङ्कर भक्तदयाकर चक्रगदाकर शङ्कर भो ।
जय जय जय जय देव जनार्दन जय नुतिरियमपि जयतितराम् ॥ १५॥

इति अरैयर श्रीरामशर्मणा बाल्य एव विरचिता श्रीविजयनारसिंहस्तुतिः सम्पूर्णा ।

Proofread by M K Barman

Shri Vijayanarasimha Stuti

pdf was typeset on August 4, 2025

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*